श्री खाटू श्याम चालीसा

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चरणन ध्यान धर, सुमीर सच्चिदानंद ।

श्याम चालीसा भजत हूँ, रच चौपाई छंद ॥

॥ चौपाई ॥

श्याम-श्याम भजि बारम्बारा ।
सहज ही हो भवसागर पारा ॥१

इन सम देव न दूजा कोई ।
दिन दयालु न दाता होई ॥२

भीम पुत्र अहिलावती जाया ।
कही भीम का पौत्र कहलाया ॥३

यह सब कथा कही कल्पांतर ।
तनिक न मानो इसमें अंतर ॥४

बर्बरीक विष्णु अवतारा ।
भक्तन हेतु मनुज तन धारा ॥५

वसुदेव देवकी प्यारे ।
जसुमति मैया नंद दुलारे ॥६

मधुसूदन गोपाल मुरारी ।
वृजकिशोर गोवर्धन धारी ॥७

सियाराम श्री हरि गोविंदा ।
दिनपाल श्री बाल मुकुंदा ॥८

दामोदर रणछोड़ बिहारी ।
नाथ द्वारकाधीश खरारी ॥९

नरहरि रूप प्रहलद प्यारा ।
खम्भ फारि हिरनाकुश मारा ॥१०

राधावल्लभ रुक्मणी कंता ।
गोपी बल्लभ कंस हनंता ॥११

मनमोहन चित चोर कहाए ।
माखन चोरि-चारि कर खाए ॥१२

मुरलीधर यदुपति घनश्यामा ।
कृष्ण पतित पावन अभिरामा ॥१३

मायापति लक्ष्मीपति ईशा ।
पुरुषोत्तम केशव जगदीशा ॥१४

विश्वपति जय भुवन पसारा ।
दीनबंधु भक्तन रखवारा ॥१५

प्रभु का भेद न कोई पाया ।
शेष महेश थके मुनिराया ॥१६

नारद शारद ऋषि योगिंदर ।
श्याम-श्याम सब रटत निरंतर ॥१७

कवि कोदी करी कनन गिनंता ।
नाम अपार अथाह अनंता ॥१८

हर सृष्टी हर सुग में भाई ।
ये अवतार भक्त सुखदाई ॥१९

ह्रदय माही करि देखु विचारा ।
श्याम भजे तो हो निस्तारा ॥२०

कौर पढ़ावत गणिका तारी ।
भीलनी की भक्ति बलिहारी ॥२१

सती अहिल्या गौतम नारी ।
भई शापवश शिला दुलारी ॥२२

श्याम चरण रज चित लाई ।
पहुंची पति लोक में जाही ॥२३

अजामिल अरु सदन कसाई ।
नाम प्रताप परम गति पाई ॥२४

जाके श्याम नाम अधारा ।
सुख लहहि दुःख दूर हो सारा ॥२५

श्याम सलोवन है अति सुंदर ।
मोर मुकुट सिर तन पीतांबर ॥२६

गले बैजंती माल सुहाई ।
छवि अनूप भक्तन मान भाई ॥२७

श्याम-श्याम सुमिरहु दिन-राती ।
श्याम दुपहरी कर परभाती ॥२८

श्याम सारथी जिस रथ के ।
रोड़े दूर होए उस पथ के ॥२९

श्याम भक्त न कही पर हारा ।
भीर परि तब श्याम पुकारा ॥३०

रसना श्याम नाम रस पी ले ।
जी ले श्याम नाम के ही ले ॥३१

संसारी सुख भोग मिलेगा ।
अंत श्याम सुख योग मिलेगा ॥३२

श्याम प्रभु हैं तन के काले ।
मन के गोरे भोले-भाले ॥३३

श्याम संत भक्तन हितकारी ।
रोग-दोष अध नाशे भारी ॥३४

प्रेम सहित जब नाम पुकारा ।
भक्त लगत श्याम को प्यारा ॥३५

खाटू में हैं मथुरावासी ।
पारब्रह्म पूर्ण अविनाशी ॥३६

सुधा तान भरि मुरली बजाई ।
चहु दिशि जहां सुनी पाई ॥३७

वृद्ध-बाल जेते नारि नर ।
मुग्ध भये सुनि बंशी स्वर ॥३८

हड़बड़ कर सब पहुंचे जाई ।
खाटू में जहां श्याम कन्हाई ॥३९

जिसने श्याम स्वरूप निहारा ।
भव भय से पाया छुटकारा ॥४०

॥ दोहा ॥

श्याम सलोने संवारे, बर्बरीक तनुधार ।

इच्छा पूर्ण भक्त की, करो न लाओ बार॥

paramsoul.com